VRITIKA
FASHIONS
नित्यं
अभिवादन शीलस्य नित्यं वृधोपसेविन |
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ||
B.NO.: 201

VRITIKA
FASHIONS
नित्यं
अभिवादन शीलस्य नित्यं वृधोपसेविन |
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ||
B.NO.: 201

VRITIKA
FASHIONS
D.NO.:207

VRITIKA
FASHIONS

जननी

भूमेः गरीयसी माता, स्वर्गात उच्चतरः पिता।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गात अपि गरीयसी।।

D.NO.: 207

VRITIKA
FASHIONS
छाया
सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छाया समन्वितः।
यदि दैवात् फलं नास्ति,छाया केन निवार्यते।।
D.NO.. 206

VRITIKA
FASHIONS
D.NO.:206

VRITIKA
FASHIONS
मणिना
दुर्जनः परिहर्तव्यः विद्ययालंकृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः ॥
D.NO.:203

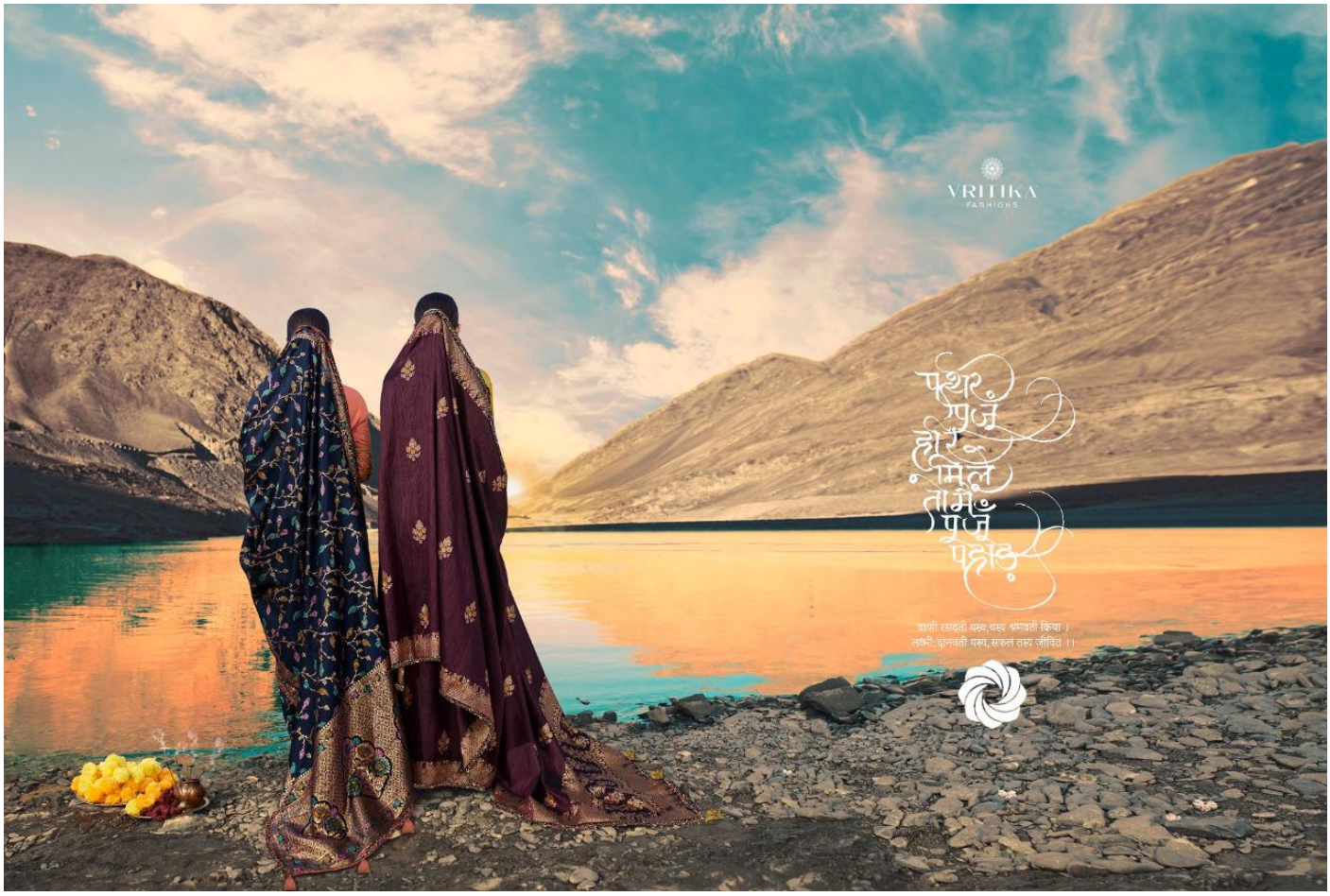
VRITIKA
FASHIONS
पत्थर पूजूं हो र मिले तो मैं पूजूं पहाड़
वाणी रसवती यस्य,यस्य श्रमवती क्रिया ।
लक्ष्मी: दानवती यस्य,सकलं तस्य जीवितं ।।

VRITIKA
FASHIONS
वाणी
D.NO.:202

D.NO.:201

D.NO.:202

D.NO.:203

D.NO.:204

D.NO.:205

D.NO.:206

D.NO.:207

VRITIKA®
LIFESTYLE
सुराली
VOL-02

MAHENDRA SAJJAN Set Design

VRITIKA
FASHIONS
धर्म
पुत्रेषु दीपक : चन्द्र :, प्रभाते दीपक : रवे : ।
त्रिलोक्ये दीपक: धर्म:, सुपुत्र :कुलदीपक: ।।
D.NO.: 204

VRITIKA
FASHIONS
नित्यं
अभिवादन शीलस्य नित्यं वृधोपसेविन |
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ||
B.NO.: 201

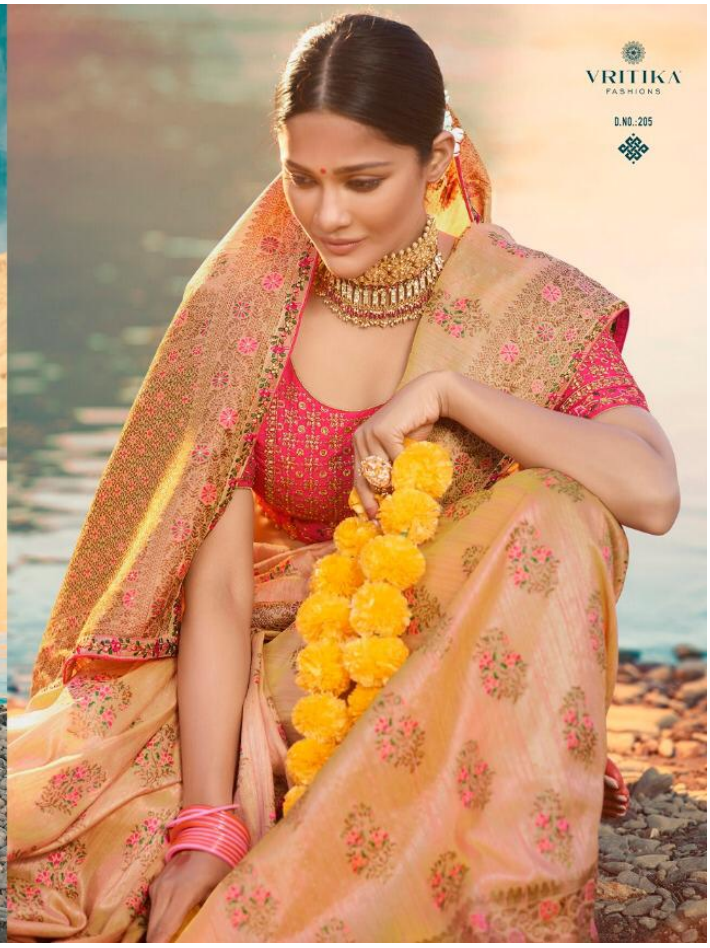
VRITIKA
FASHIONS
D.NO.:205

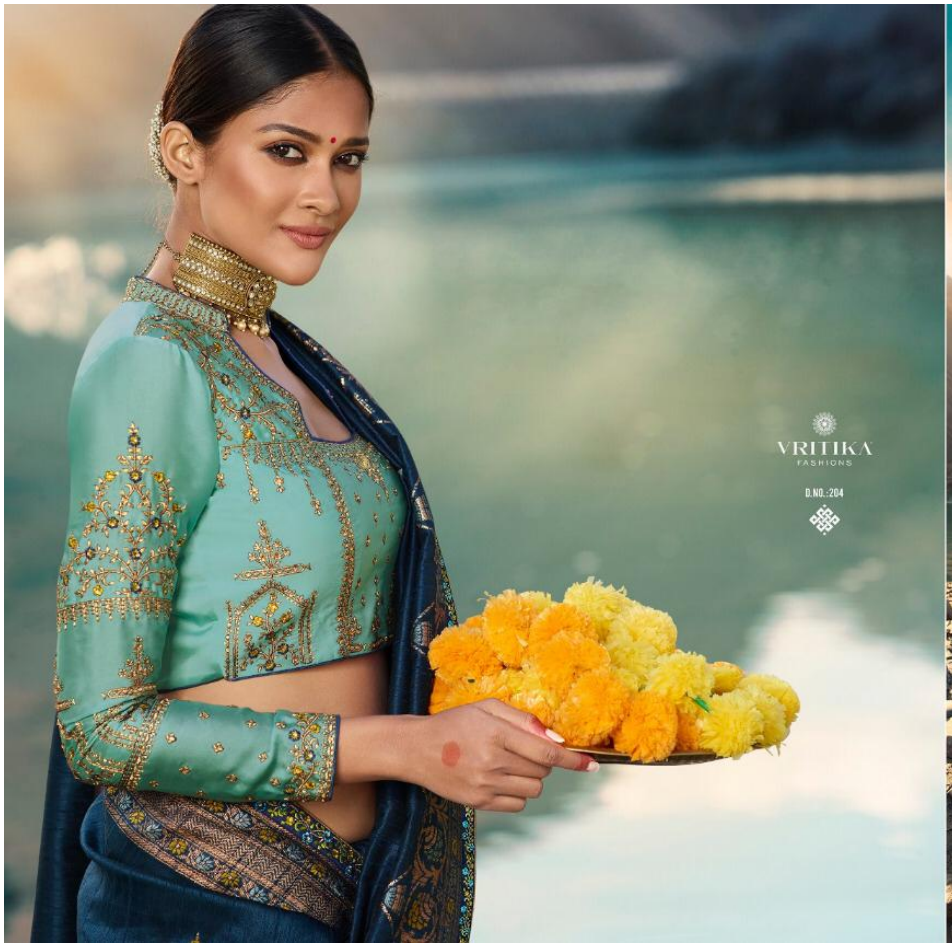
VRITIKA
FASHIONS
D.NO.:204

VRITIKA
FASHIONS
D.NO.:201

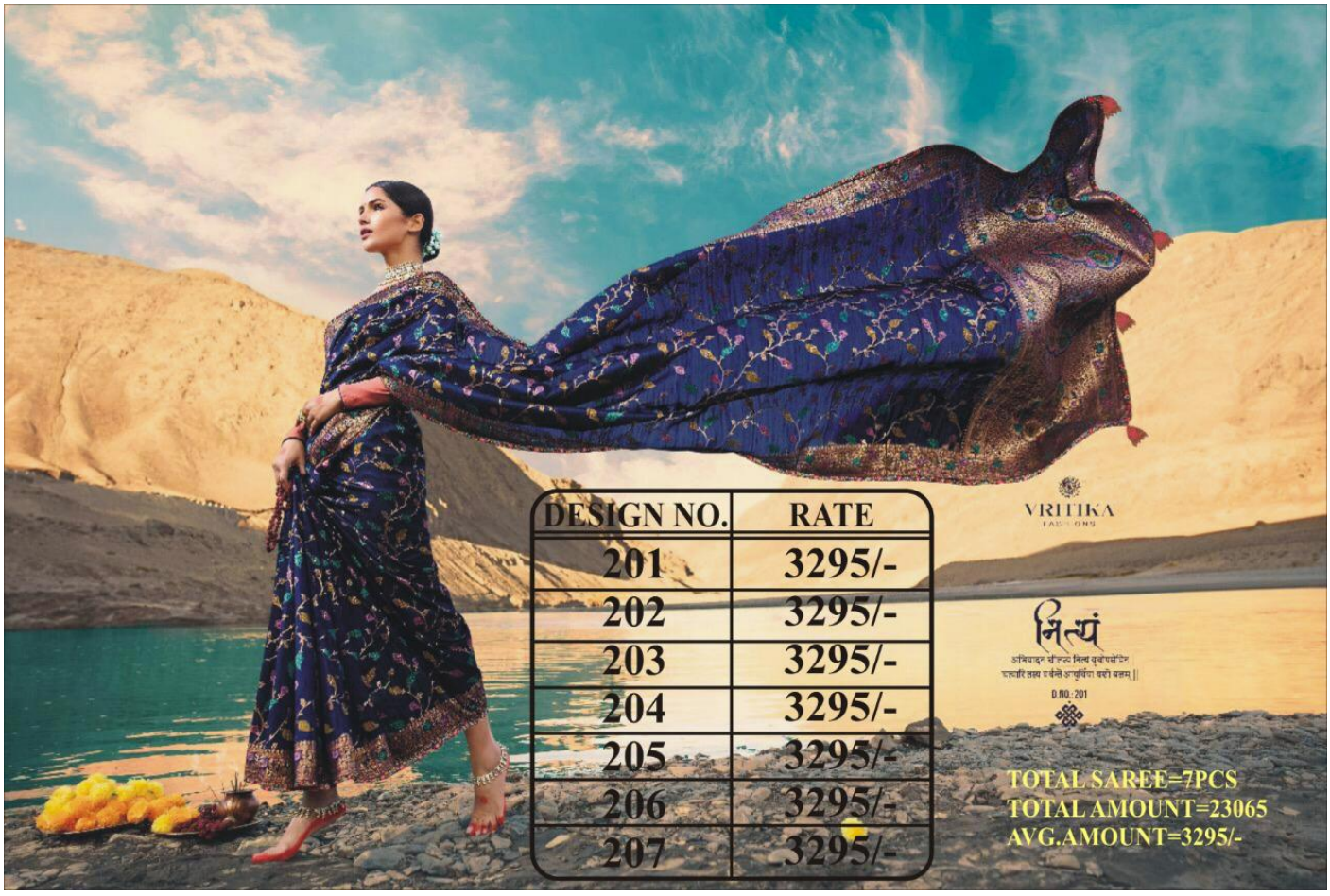

DESIGN NO.	RATE
201	3295/-
202	3295/-
203	3295/-
204	3295/-
205	3295/-
206	3295/-
207	3295/-

TOTAL SAREE=7PCS
TOTAL AMOUNT=23065
AVG.AMOUNT=3295/-

VRITIKA
FASHIONS
ध्येयः सदा सवितृ-मण्डल-मध्यवर्ती।
नारायणः सरसिजाऽसन सन्निविष्टः॥
केयूरवान् मकर-कुण्डलवान किरीट।
ह्यारी हिरण्मय वपुर्धृत शंख-चक्रः॥
सुराली
VOL.02

VRITIKA®
LIFESTYLE

corporate
inquiries solicites

0 96380 85 000

vritika.lifestyle

www.vritikalifestyle.com
info@vritikalifestyle.com

complimenuarty copy – not for sale

VRITIKA LIFESTYLE

VRITIKA
FASHIONS
वाणी
D.NO. 202

VRITIKA
FASHIONS
D.NO.:203

VRITIKA
FASHIONS

सत्यम् शिवम् सुंन्दरम्

सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यं प्रियम।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात एष धर्मः सनातनः।।

D.NO.:205

VRITIKA
FASHIONS

सत्यम् शिवम् सुंन्दरम्

सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यं प्रियम।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात एष धर्मः सनातनः।।

D.NO.:205